वर्ष :: 33 अंक : 36
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता

/mithilavarnan

झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

बोकारो :: रविवार, 04 जून, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मैनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

बेपटरी सिस्टम और बुलेट ट्रेन के सपने

शालीमार टू चेन्नई... मौत का सफर, चौतरफा शोक

'कवच' होता, तो नहीं होता हादसा

बता दें कि भारतीय रेलवे ने चलती ट्रेनों की सुरक्षा बढ़ाने के लिए 'कवच' नामक ऑटोमेटिक ट्रेन प्रोटक्शन सिस्टम तैयार किया है। अगर लोको पायलट ब्रेक नहीं चला पाता है तो 'कवच' स्वचालित रूप से ब्रेक लगाकर ट्रेन की गति को नियंत्रित करता है। 'कवच' दो इंजनों के बीच टक्कर को रोकने में भी सक्षम है। रेलवे के मुताबिक जिस रूट पर 'कवच' सिस्टम लगा होता है, वहां अगर एक पटरी पर दो ट्रेन आमने-सामने आ भी जाए तो हादसा नहीं हो सकता। वर्ष 2022 के बजट में आत्मनिर्भर भारत के तहत 'कवच' की घोषणा की गई थी। कुल 2000 किलोमीटर रेल नेटवर्क पर इस तकनीक को लगाने की योजना थी, लेकिन जानकारी के अनुसार मात्र 2% इस प्रणाली को पिछले एक साल में लागू किया जा सका है। एक तो इतनी महत्वपूर्ण योजना के प्रति उदासीनता व अनदेखी आंधी और दूसरी डिजिटल और हाईटेक दौर में सिग्नल संबंधी गलती अपने-आप में आश्चर्य की बात है। यह निश्चय ही यह बताता है कि आज भी हमारी व्यवस्था में सुधार की जरूरत है और जब तक यह बेपटरी व्यवस्था पटरी पर नहीं आ जाती, तब तक वास्तव में बुलेट ट्रेन के सपने देखना मुंगेरीलाल के हसीन सपने से कम नहीं। बता दें कि रेल हादसे के बाद प्रधानमंत्री ने गोवा को दी जाने वाली पहली वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन के उद्घाटन को स्थगित कर दिया।

इधर, सियासत भी... विपक्ष ने हादसे को लेकर घेरा

अपने देश में कुछ हो न हो, सियासत पहले शुरू हो जाती है। इतने बड़े हादसे को लेकर लोगों की जानमाल की रक्षा व उनकी मदद में तत्परता दिखाने की बजाय कुछ लोग खुलकर सियासत पर उतर आए हैं। बंगाल की मुख्यमंत्री एवं पूर्व रेल मंत्री ममता बनर्जी ने इसे सदी का सबसे बड़ा रेल हादसा करार दिया। उन्होंने कवच सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल किए। आरजेडी अध्यक्ष एवं पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव ने आरोप लगाया है कि रेलवे के निजीकरण के कारण ऐसी दुर्गति आ पड़ी है। हादसे का मूल कारण रेलवे की लापरवाही है। पहले रेल बजट अलग से पारित हुआ करता था। रेलवे में हजारों लोगों की नौकरियां लगती थीं। अब तो लोग रेलमंत्री तक का नाम नहीं जानते। विपक्ष की ओर से अश्विनी वैष्णव का एक पुराना वीडियो शेयर किया जा रहा है, जिसमें यह दिखाया जा रहा है कि कैसे उन्होंने जोखिम लेते हुए ट्रेन के इंजन में यात्रा की, जिसके सामने उसी ट्रैक पर दूसरी ट्रेन खड़ी थी और दूसरी ट्रेन से 400 मीटर पहले वह इंजन अपने आप रुक गया। एनसीपी नेता अजीत पवार ने कहा कि पहले लोग ऐसे हादसों पर इस्तीफा दे देते थे, पर अब.....! आरजेडी की ओर से शनिवार को ट्वीट कर लिखा गया कि 'कवच' के दौर में भी कांड हो गया? मोदी सरकार के लिए बस 'वंदे भारत' एक्सप्रेस ट्रेनों में ही इंसान चलते हैं? अगर रेल मंत्री में कुछ नैतिकता और आत्मग्लानि हो तो इतने परिवारों के बर्बाद होने पर तुरंत इस्तीफा दे दें। बता दें कि इससे पहले अगस्त 2017 में तत्कालीन रेल मंत्री सुरेश प्रभु ने दो ट्रेन दुर्घटना के बाद इस्तीफे की पेशकश कर दी थी। उस हादसे में 24 लोग मारे गए थे और उन्हें इस घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफा सौंप दिया था।

हादसे के दोषियों को मिलेगी सख्त से सख्त सजा : प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं घटनास्थल का दौरा किया। इस दौरान उनके साथ केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव और केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान भी मौजूद थे। इस दौरान पीएम मोदी ने फोन पर स्वास्थ्य मंत्री और कैबिनेट सचिव से बात की और उन्हें जरूरी निर्देश दिए। पीएम ने घायलों को हर संभव मदद पहुंचाने के लिए भी कहा है। इसके बाद पीएम मोदी ने बालासोर के हॉस्पिटल जाकर घायलों से भी मुलाकात की। पीएम मोदी ने कहा कि बालासोर हादसा बेहद दर्दनाक, विचलित करने वाला है। हादसे को बयां करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। हम घायलों के इलाज में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। हादसे के दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा और उन्हें सख्त से सख्त सजा दी मिलेगी। ओडिशा सरकार ने हर संभव मदद की है। उम्मीद है हम इन घटनाओं से सीखेंगे। पीएम मोदी ने अधिकारियों से घायलों और उनके परिवारों को सभी आवश्यक सहायता प्रदान करने को कहा है। उन्होंने यह भी कहा कि यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि शोक संतप्त परिवारों को असुविधा का सामना न करना पड़े और प्रभावितों को आवश्यक सहायता मिलती रहे।

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : शुक्रवार की शाम। समय लगभग सवा सात बज रहे थे। 127 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से हवा को चीरती हुई छुक-छुक करती रफ्तार थी। किसी की मंजिल करीब आने वाली थी तो कोई एक-दो स्टेशन के बाद अपनी मंजिल पर उतरने की तैयारी में था। कोई आराम कर रहा था, तो कोई बच्चों संग खेल रहा था। चाय वाले, ठंडा वाले ट्रेन में इस बोगी से उस बोगी चक्कर लगा रहे थे। बच्चे चिप्स, फ्रूटी, तो बड़े चाय खरीद रहे थे। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था कि अचानक एक जोरदार धमाका हुआ और चंद सेकेंड में सब कुछ तबाह हो गया। हर तरफ लाशें बिखर गईं। जो लोग अपनी मंजिल पर उतरने की तैयारी में थे, जो बच्चे अपने माता-पिता के साथ खेल रहे थे, उनकी लाशें बिखर गईं। हर तरफ चीख-पुकार और तबाही का मंजर छा गया। शालीमार से चेन्नई का सफर और यशवंतपुर से हावड़ा की यात्रा सैकड़ों लोगों की जिंदगी के लिए मौत का सफर साबित हो गई। हम बात कर रहे हैं ओडिशा के बालासोर में हुई इस सदी की सबसे बड़ी रेल दुर्घटना की। इस हादसे ने लगभग 300 लोगों की जिन्दगी लील ली और तकरीबन 1000 लोगों को घायल कर दिया।

हादसा ऐसा था कि किसी को कुछ भी सोचने-समझने का मौका नहीं मिला। मिनटों में ही रेल पटरियां श्मशान बन गईं। एक साथ तीन-तीन ट्रेनों की टक्कर के बाद कोई लाशों में दब गया तो कोई ट्रेन के पिचके हुए मलबे में दफन हो गया। किसी बच्चे का माता-पिता मर गया तो वह भी रोते-रोते देखते ही देखते मौत की आगोश में समा गया। ऐसे ही एक नहीं, अनेक हृदय विदारक दृश्य इस दुर्घटना ने दिखाए। जिन घरों में अपनों के आने का इंतजार था, वहां मातम पसर गया। इस घटना ने साबित कर दिया कि भले ही हम आज बुलेट ट्रेन के सपने देख रहे हों, लेकिन आज भी वास्तव में हमारा सिस्टम बेपटरी है। आज भी हम सुरक्षा प्रणाली वैसी विकसित नहीं कर सके हैं, जिनकी वास्तव में जरूरत है। केवल खानापूर्ति के लिए चंद ट्रेनों में 'कवच' नामक सुरक्षा उपकरण लगा दिया गया है, लेकिन कोरोमंडल और हावड़ा-यशवंतपुर एक्सप्रेस जैसी ट्रेनें इस सुविधा से महरूम रहीं। नतीजा हर तरफ चीत्कार, हर तरफ तबाही।

हालांकि यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि घटना किसी तकनीकी खराबी के चलते हुई या फिर मानवीय गलती के कारण। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव का कहना है कि मामले की जांच उच्चरीय समिति करेगी। इसके अलावा रेल सुरक्षा आयुक्त एक स्वतंत्र जांच करेंगे। परंतु, जानकारी के अनुसार इस हादसे के पीछे तकनीकी और **(शेष पेज- 7 पर)**

– संपादकीय –

राहुल गांधी के विवादित बयान

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी अपने विवादित बयानों को लेकर हमेशा चर्चा में बने रहते हैं। खासकर, अपनी विदेश यात्रा के दौरान राहुल ऐसी बयानबाजी कर बैठते हैं, जिसे लेकर देश में उनकी किरकिरी होती है। राहुल फिलहाल 10 दिनों की अमेरिका यात्रा पर हैं। वहां वह विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल हो रहे हैं। इसी दौरान उन्होंने एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और आरएसएस को आड़े हाथ लिया। केंद्रीय एजेंसियों के दुरुपयोग का आरोप लगाते हुए उन्होंने यहां तक कहा कि देश में आज मुसलमान ही नहीं, सभी अल्पसंख्यक और दलित आदिवासी भी डरा हुआ महसूस कर रहे हैं। उनकी इस बयानबाजी ने भाजपा को फिर एक बड़ा मौका दे दिया है। भाजपा के नेता राहुल पर विदेश की धरती से एक बार फिर भारत को बदनाम करने का आरोप लगाते हुए उनके खिलाफ हमलावर हो चुके हैं। भाजपा नेताओं का कहना है कि राहुल गांधी मोदी विरोध के नाम पर देश के विरोध पर उतर आए हैं। हालांकि, यह पहली बार नहीं है। इससे पहले लंदन की यात्रा के दौरान भी राहुल गांधी अपने बयानों को लेकर इसी तरह घिर गए थे। भाजपा ने उस समय भी उनसे पूछा था कि बाहर जाकर प्रधानमंत्री और सरकार की आलोचना क्यों करते हैं? करें तो हिंदुस्तान में करें। दरअसल, राहुल गांधी एक सोची-समझी रणनीति के तहत जान-बूझकर इस तरह की बयानबाजी कर विवाद खड़ा करते हैं। सच तो यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी इसी महीने अमेरिका की यात्रा पर जा रहे हैं। राहुल को ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विदेशों में जाकर प्रवासी भारतीयों के बीच काफी लोकप्रियता हासिल कर ली है। अब उनकी बराबरी कैसे की जाय। शायद इसी बात को ध्यान में रखते हुए राहुल विदेश में जाकर मोदी और उनकी सरकार के खिलाफ न सिर्फ जहर उगल रहे हैं, बल्कि अपनी तुष्टिकरण की मानसिकता भी उजागर कर रहे हैं। सवाल उठता है कि देश में लव जिहाद व जबरन धर्मांतरण, जिन राज्यों में कांग्रेस या उसके समर्थन से सरकारें चल रही हैं, वहां बांग्लादेशी नागरिकों की घुसपैठ और एक खास समुदाय की बढ़ती आबादी जैसे मामलों को लेकर राहुल गांधी क्यों मौन हैं? क्या उन्हें यह मालूम नहीं है कि देश के कई राज्यों में बहुसंख्यक समुदाय के धार्मिक उत्सवों में शोभा-यात्रा पर हमले की असंख्य घटनाओं को लेकर बहुसंख्यक समाज खुद को असहज महसूस करने लगे हैं? स्पष्ट है कि राहुल गांधी केवल एक खास समुदाय के असहज होने का झूठा मुद्दा उठाकर वह लोगों को गुमराह कर रहे हैं। शायद राहुल गांधी यह भूल रहे हैं कि इस बार अमेरिका में उन्होंने जिस तरह के बयान दिये हैं, उससे उन्होंने अल्पसंख्यक समाज को भले ही खुश करने की मंशा पाल रखी हो, देश का बहुसंख्यक समाज उनकी अनर्गल बयानबाजी को पचा नहीं पा रहा है। क्योंकि, राहुल ने इस बार न सिर्फ मोदी सरकार को कटघरे में खड़ा किया है, बल्कि निर्वाचन आयोग, संवैधानिक जांच एजेंसियों और यहां तक कि भारत की न्यायिक व्यवस्था पर भी सवाल खड़े किये हैं। लोकतंत्र में उन्हें सरकार की आलोचना करने का अधिकार है, लेकिन यही बात अगर वे देश की जनता को समझा पाने में सफल हो जाते तो यह उनके लिए हितकारी होता। लेकिन, विदेश की धरती से राहुल गांधी का ऐसा बयान देश-हित में कदापि नहीं माना जा सकता है। इससे विदेशों में भारत की छवि निश्चय ही धूमिल हो रही है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

लव जिहाद- एक 'मकड़जाल'

-डॉ. सविता मिश्रा मागधी
बंगलुरू, मो.- 8618093357

वेश बदलकर प्यार करने वाला हत्यारा होता है...।
भेड़ियों के प्यार में पड़, मूर्ख लड़कियां तोड़तीं अपने मां-बाप का विश्वास।
लव जिहाद में बेचीं जातीं या मारी जातीं, करतीं अपने कुल का नाश।।

लव जिहाद के मामले मकड़जाल की तरह फैलते व कसते जा रहे हैं। इसे षड्यन्त्र कहें, दुर्भाग्य कहें या हमारी अज्ञानता, कि हमारी बेटियां गुमराह हो रही हैं। एक अनुमान के अनुसार साल भर में लगभग डेढ़ सौ लड़कियां लव जिहाद की शिकार हो चुकीं हैं। कोई ऐसा राज्य नहीं, जो इस अपराध से अछूता हो।

दिल्ली की श्रद्धा, पूर्णिया की नीलम को उनके प्यार ने टुकड़ों में विभाजित कर दिया। चंद दिनों पहले नाबालिग साक्षी को हत्यारे साहिल ने आम रास्ते पर चाकू से गोदकर मार डाला। गिरिडीह में नाबालिग से दो जेहादियों ने गैंग रेप कर मार डाला। रायपुर में नाबालिग से शादी कर उसे कमरे में बंद कर गर्भ निरोधक का ओवर डोज दे मार डाला। पुणे में भी लव जिहाद का मामला सामने आया है, जिसमें दो वर्ष पहले नाबालिग को भगाकर बंदी बना लिया।

वेश बदल कर साहिल ने साक्षी से दोस्ती की थी। गले में रुद्राक्ष, कलाई पर मौली, नाम राहुल। भजन भी गाता था। सोचने वाली बात है कि वह अपनी असलियत खुल जाने पर हत्यारा बन बैठा। जिस समय वह साक्षी पर वार कर रहा था, वहां से आठ व्यक्ति गुजरे। किसी ने भी साक्षी को बचाने की कोशिश नहीं की। एक-एक ईंट उठाकर मारते तो वह हड़बड़ा जाता और साक्षी बच जाती। यह कैसा डर है कि सभी के सभी मूकदर्शक बन चलते बने? शायद उनकी इंसानियत मर चुकी है। वे जीवित लाश में परिवर्तित हो चुके हैं। जो व्यक्ति अपने सामने हो रहे अत्याचार का विरोध भी न कर पाए, उससे बड़ा कायर कौन हो सकता है? कायरता की बात की जाय तो हम मां-बाप भी कायर हैं। बराबर के दोषी हैं। क्योंकि, हमारा कानून उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। आफताब को ले पुलिस जंगल-जंगल भटकी, सबूत इकट्ठा करने के लिए। आज तक कोर्ट को सबूत कम लग रहे हैं। अरे! फ्रिज में लाश के टुकड़ों का मिलना कम है क्या? साहिल अपना बयान बार-बार बदल रहा है। चाकू का मिलना ही पक्का सबूत है क्या? सबसे बड़ा सबूत तो सीसीटीवी कैमरा है। इन्हें बचाने वाले इनके आका, मंहगा से मंहगा वकील कर इनकी सजा कम करवा देंगे। और, अगले जिहादी को तैयार करने में इन हत्यारों के दुष्कृत को हीरो की तरह पेश किया जाएगा।

सवाल हम पर है, हम क्यों नहीं अपनी संतान को उसके बचपन से, उसे अपनी संस्कृति, अपने धर्म से अवगत कराते हैं। सिक्ख, ईसाई, मुसलमान ये न अपना पहनावा बदलते हैं, न अपने धर्म के रीति-रिवाज। और, न ही किसी से डरते हैं। फिर वीर अग्रजों की संतान होकर हम क्यों दीन-हीन बन आधुनिकता के नाम पर अपना सर्वनाश करने को तुले हैं?

हमें याद रखना होगा कि बच्चे गर्भ से ही हमारा अनुकरण करने लगते हैं। हमारे द्वारा किए जा रहे पूजा-पाठ, बड़ों का सम्मान, अपने धर्म के प्रति निष्ठा को देखकर जो संतान बड़ी होगी, वह गुमराह होने से अवश्य बच जाएगी। बच्चों में अच्छे-बुरे का भाव बचपन से ही भर देना चाहिए। बच्चों को अपने विश्वास में लेने के लिए उन्हें समय देना होगा। बच्चों को उतनी ही आजादी दें, जिसमें उनके पंख न कट पाएं।

(यह लेखिका के निजी विचार हैं।)

अनियंत्रित पर्यावरण

मैथिली कविता
– शम्भुनाथ –

प्रात मे मार्तण्ड चढिके माथ नाचय
होइछ पूवार्भान दिवसक ताप केहन
जरि रहल रजनीक सगरो देह तबधल
ऊष्ण वायुक वेग सेहो भेलै मन्थर।

ताकि रहलै छांह आश्रय सघन तरु केर
वृक्ष काया आइ सद्यः डहि रहल छै
आइ वसुधा तप्त बालुक कण ओछौने
पानि सरवर आइ खलवल क'रहल छै।

खेल प्रकृति संग करइत छी निरंतर
काटि रहलहुं अछि सतत निर्वाध वन के
कथित उन्नति आर भौतिक सुखक लोभें
सोच नहि मन मे भविष्यक केहन हेतै।।

अणु तथा परमाणु शस्त्रक होड़ सबतरि
बम तथा बारूद केर हो सतत बरखा
अहंकारे डेग बढ़ि रहलै विनाशक
प्रगति मानव देखि कें मन होय शंका।

जेठ नहि बीतल धरा जलमग्न भेलै
ताण्डवक नर्तन महोदधि करय सदिखन
भ'रहल भूकम्प रहि रहि धरा डोलय
करी चिन्ता प्रकृति केहि विध शान्त हेतै।।

आइ मेदिनि भेल विह्वल कानि रहलै
दृगक कोरे सरित बनि निर्वाध नोरक
गिरिक प्रान्तर काननक क्षय भ'रहल छै
करब कोना आश सुरभित मलय भोरक।।

इस्पात कर्मियों का उत्साववर्द्धन कर कई सौगातें दे गए नए सेल अध्यक्ष

बीएसएल को उत्कृष्टता के शिखर पर ले जाने किया आह्वान

संवाददाता
बोकारो : भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड (सेल) के नवनियुक्त अध्यक्ष अमरेन्दु प्रकाश पदभार संभालने के बाद यहां इस्पातकर्मियों का उत्साहवर्द्धन कर तथा बोकारो को कई सौगातें देकर दिल्ली प्रस्थान कर गए। इस्पात भवन परिसर में बीएसएल अधिकारियों व कर्मियों की उपस्थिति में सीआईएसएफ जवानों द्वारा श्री प्रकाश को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। सेल अध्यक्ष ने प्रस्थान करने से पूर्व उपस्थित अधिकारियों व कर्मचरियों से मुलाकात की, उनसे हाथ मिलाए और उनका उत्साहवर्धन किया। श्री प्रकाश ने बोकारो स्टील प्लांट की प्रगति के सिलसिले को बनाए रखने और इसे उत्कृष्टता के शिखर पर ले जाने का आह्वान किया।

अतनु भौमिक को मिला अतिरिक्त प्रभार

अमरेंदु प्रकाश के जाने के बाद बोकारो स्टील प्लांट में निदेशक प्रभारी के खाली पद का अतिरिक्त प्रभार राउरकेला स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी अतनु भूमि को दिया गया है। सेल मंत्रालय ने इसे लेकर बाकायदा आदेश भी जारी कर दिया। श्री भौमिक बोकारो स्टील प्लांट के अधिशासी निदेशक भी रह चुके हैं। बताया जाता है कि अतनु भौमिक की कार्यप्रणाली सख्त है। उन्हें काम में कोताही और भ्रष्टाचार कतई पसंद नहीं है। बोकारो स्टील प्लांट में अधिशासी निदेशक (संकार्य) पद पर रहते उन्होंने कई भ्रष्टाचारियों के खिलाफ कार्रवाई की तैयारी शुरू की थी, परंतु वह बीच में राउरकेला स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी बना दिए गए। 26 अक्टूबर 2019 को उन्होंने यहां अधिशासी निदेशक (संकार्य) का कार्यभार संभाला था। इसके बाद 17 दिसंबर 2021 को राउरकेला स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी के रूप में पब्लिक इंटरप्राइजेज सेलेक्शन बोर्ड ने उनकी नियुक्ति कर दी। बताया जाता है कि राउरकेला में उन्होंने चिकित्सा व्यवस्था में सुधार को लेकर काफी बड़े काम किए हैं। अब बोकारोवासियों को भी उनसे यहां सकारात्मक उम्मीदें हैं।

बीजीएच को मिला न्यूरो सर्जरी व रीढ़ के इलाज का पूर्वी भारत का सबसे उन्नत उपकरण

सेल अध्यक्ष अमरेंदु प्रकाश ने दिल्ली विदा होने से पूर्व बोकारो जेनरल अस्पताल (बीजीएच) में नई अत्याधुनिक सुविधाओं और उपकरणों का उद्घाटन किया। इससे मरीजों के बेहतर इलाज में मदद मिलेगी। सेल अध्यक्ष ने बोकारो जनरल अस्पताल के ऑपरेशन थियेटर में अत्याधुनिक न्यूरोसर्जिकल ऑपरेटिंग माइक्रोस्कोप किनेवो 900 और एज-2 अल्ट्रासाउंड मशीन जैसे उन्नतअत्याधुनिक उपकरणों का उद्घाटन किया और उन्हें मरीजों के लिए समर्पित किया। अत्याधुनिक न्यूरोसर्जिकल ऑपरेटिंग माइक्रोस्कोप काइनवो 900 (कार्ल जीस द्वारा निर्मित) न केवल झारखंड, बल्कि देश के पूर्वी हिस्से के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में सबसे उन्नत उपकरण है। यह उपकरण बीजीएच के न्यूरोसर्जरी विभाग के एचओडी (न्यूरोसर्जरी) डॉ. आनंद कुमार के नेतृत्व में ग्लोबल स्टैंडर्ड ऑपरेटिव केयर प्रदान करने तथा विभिन्न प्रकार के मस्तिष्क और रीढ़ की सर्जरी के दायरे को व्यापक रूप से बढ़ाने में सक्षम करेगा।

बदल गया सेक्टर- 3 सामुदायिक भवन का स्वरूप ... बास्केटबॉल, बैडमिंटन और तैराकी की मिलेंगी बेहतर सुविधाएं

नगर के सेक्टर-3 स्थित सामुदायिक भवन को स्टील क्लब एवं रिक्रिएशन सेंटर का नया रूप दिया जा रहा है। इसका शुभारंभ सेल अध्यक्ष अमरेंदु प्रकाश ने किया। इस अवसर पर अधिशासी निदेशक (वित्त एवं लेखा) सुरेश रंगानी, अधिशासी निदेशक (एमएम) अमिताभ श्रीवास्तव, अधिशासी निदेशक (माइंस) जयदीप दासगुप्ता, अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) राजन प्रसाद, मुख्य महाप्रबंधक (नगर प्रशासन) बीएस पोपली, मुख्य महाप्रबंधक (कार्मिक) हरि मोहन झा तथा अन्य वरीय अधिकारियों सहित बड़ी संख्या में खिलाड़ी व खेल प्रेमी उपस्थित थे। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार नए रूप में स्टील क्लब एवं रिक्रियेशन सेंटर में नौ बड़े कमरे, तीन छोटे कमरे, एक हॉल, दो बास्केटबाल कोर्ट, दो बैडमिंटन कोर्ट और एक स्विमिंग पूल की सुविधा बोकारो स्टील के कर्मियों के लिए उपलब्ध कराई जा रही है। इस परिसर की सभी सुविधाओं को अपग्रेड किया जा रहा है और नए लुक के साथ यह सेंटर कर्मियों के लिए उपलब्ध कराई जाएगी।

उपलब्धि क्रोएशिया गणराज्य के कॉन्सुलेट जनरल के हाथों विद्यालय के प्राचार्य डॉ. गंगवार ने ग्रहण किया

ग्रीन विक्ट्री... डीपीएस बोकारो ने दुबई में जीता 'ग्रीन स्कूल ऑफ द ईयर- इंडिया' का खिताब

संवाददाता
बोकारो : दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) बोकारो की ओर से अपने 'गो ग्रीन इनिशिएटिव' के तहत हरितिमा-रक्षा के प्रयास लगातार किए जा रहे हैं। इन्हीं प्रयासों की बदौलत विद्यालय ने पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में इस बार दुबई में 'ग्रीन स्कूल ऑफ द ईयर- इंडिया' अवार्ड जीतकर एक हरित विजय पाई है। शिक्षा में पर्यावरण-संरक्षण के समावेश की महत्वपूर्ण पहल के लिए विद्यालय को यह वैश्विक उपलब्धि मिली है। विद्यालय की ओर से प्राचार्य डॉ. एएस गंगवार ने दुबई में ग्लोबल एजुकेशन समिट एंड अवॉर्ड्स 2022 नामक कार्यक्रम के दौरान यह सम्मान ग्रहण किया। अवार्ड के लिए 57 देशों से कुल 985 नॉमिनेशन आए थे, जिनमें अलग-अलग कैटेगरी में कुल 26 देशों के 70 नॉमिनेशन चुने गए। खास बात यह रही कि डीपीएस बोकारो इनमें पूरे भारतवर्ष से ग्रीन कैटेगरी में यह प्रतिष्ठित वैश्विक सम्मान पाने वाला एकमात्र विद्यालय रहा।

एकेएस एजुकेशन अवार्ड्स के सीईओ दिनेश कामरा की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह के मुख्य अतिथि क्रोएशिया गणराज्य के कॉन्सुलेट जनरल जैस्मिन दल्विक के हाथों डॉ. गंगवार ने विद्यालय की तरफ से यह अवार्ड प्राप्त किया। मौके पर विशिष्ट अतिथियों में अबू-धाबी में हंगरी दूतावास के मिशन उप प्रमुख लाज्लो मार्टन और दुबई में आजरबाइजान गणराज्य के वाइस काउंसिल, जनरल कॉन्सुलेट खनलर पशाज्दे मौजूद रहे।

डॉ. गंगवार ने इस उपलब्धि का श्रेय स्कूल के विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों सहित समस्त विद्यालय परिवार को दिया है। कहा कि सभी के समेकित सहयोग से ही हम पर्यावरण-संरक्षण की प्रतिबद्धता को साकार करने की दिशा में सतत गतिशील हैं। उन्होंने विद्यालय की ओर से वैश्विक मंच पर यह पुरस्कार प्राप्त करना गर्व का विषय बताया। उन्होंने कहा कि प्रकृति और अपनी धरती माता की रक्षा करना हम सभी का नैतिक दायित्व है। धरा सुरक्षित रहेगी तभी हम सभी सुरक्षित रह पाएंगे और संपूर्ण जीव-जगत का अस्तित्व बचा रहेगा। डॉ. गंगवार ने विद्यालय की ओर से पर्यावरण-संरक्षण के प्रयास जारी रखते हुए आगे भी इसी प्रकार के मानक व उदाहरण प्रस्तुत करने की कटिबद्धता जताई।

मिशन लाइफ : शहर के सभी जलाशयों का होगा कायाकल्प

संवाददाता
बोकारो : विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर सेल/बोकारो स्टील प्लांट लाइफ कैंपेन चला रहा है। इस संबंध में बोकारो स्टील प्लांट के पर्यावरण संरक्षण एवं सस्टेनेबिलिटी विभाग ने जन स्वास्थ्य विभाग और झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के साथ सूर्य मंदिर जलाशय में सफाई अभियान शुरू किया। सूर्य मंदिर के किनारे से प्लास्टिक कचरा और अन्य मलबे को हटा दिया गया और पर्यावरण संरक्षण और जन स्वास्थ्य विभाग द्वारा सामूहिक रूप से सफाई की गई। इस अवसर पर, मुख्य महाप्रबंधक (नगर प्रशासन), बीएस पोपली ने बोकारो के नागरिकों से जल निकायों में प्लास्टिक अपशिष्ट और अन्य मलबे को नहीं फेंकने का आह्वान किया, क्योंकि यह तालाबों की जल धारण क्षमता को गंभीर रूप से प्रभावित करता है, साथ ही भूजल स्तर को भी कम करता है। महाप्रबंधक, पर्यावरण एवं संरक्षण नवीन प्रकाश श्रीवास्तव ने भी लोगों से धरती माता और प्रकृति के अनुरूप जीवन शैली अपनाने की अपील की। जनस्वास्थ्य अधिकारी एसके परेरा एवं मो. तसनीम ने भी जलाशयों को साफ रखने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि बोकारो स्टील प्लांट के जलाशयों की नियमित सफाई पूरे बोकारो में जारी रहेगी।

नदियों की रक्षा को ले आगे आया प्रशासन बनेगा प्रोफाइल, डीसी ने दिए दिशा-निर्देश

- पर्यावरण-संरक्षण संबंधी कार्यों को लेकर अनुमंडल स्तर पर भी बनेगी उपसमिति

संवाददाता
बोकारो : जिले में नदियों को प्रदूषण और अतिक्रमण से बचाने की दिशा में प्रशासन संजीदा दिख रहा है। उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने जिला पर्यावरण समिति की बैठक में इसे लेकर जरूरी दिशा-निर्देश जारी किए। जिला समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में हुई इस बैठक में जिला वन प्रमंडल पदाधिकारी रजनीश कुमार, उप विकास आयुक्त कीर्तीश्री जी, अपर नगर आयुक्त (चास) अनिल कुमार, अपर समाहर्ता सादात अनवर समेत सभी विभागों के वरीय पदाधिकारी, औद्योगिक इकाइयों के प्रतिनिधि आदि शामिल थे। बैठक में उपायुक्त ने क्रमवार सभी एजेंडों पर विस्तार से चर्चा की। इस दौरान उन्होंने जिले से होकर बहने वाली नदियों की प्रोफाइल तैयार करने को कहा। इन नदियों का उद्गम कहां से हुआ है, जिले की सीमा में नदी कहां प्रवेश कर

रही है, उसका रूट क्या है, किन-किन पंचायतों से होकर नदी बह रही है आदि बिंदुओं का आकलन कर रिपोर्ट अगली बैठक में कमेटी के समक्ष रखने को कहा, ताकि इन नदियों को स्वच्छ व निर्मल बनाया जा सके। इस कार्य को बांध प्रमंडल एवं सिंचाई विभाग को समन्वय कर पूरा करने का निर्देश दिया।

एनजीटी के निर्देश का गंभीरता से करें अनुपालन

डीसी ने राष्ट्रीय ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का गंभीरता से अनुपालन सभी संबंधित विभागों को करना जरूरी बताया। कहा कि इसमें किसी भी तरह की लापरवाही नहीं हो। उन्होंने बीएसएल, टीटीपीएस, सीटीपीएस आदि कंपनियों के प्रतिनिधियों को ऐसे मामलों को देखने तथा निगरानी सुनिश्चित करने के लिए एक अधिकारी अथवा कर्मी को नामित करने को कहा।

खुले में कचरा जलाने वाली औद्योगिक इकाइयों को मिलेगा नोटिस

बैठक के दौरान जिले में ठोस व तरल कचरा-प्रबंधन को लेकर वर्तमान स्थिति पर भी चर्चा की गई। बीएस सिटी, नगर निगम चास, फुसरो नगर परिषद क्षेत्र में कचरा प्रबंधन के संबंध में उपायुक्त ने जानकारी ली। उपायुक्त ने जिले की विभिन्न औद्योगिक कंपनियों के कॉलोनियों में कचरा निस्तारण की विस्तृत जानकारी कमेटी को उपलब्ध कराने को लेकर पत्र जारी करने को कहा। उन्हें स्पष्ट रूप से कचरा उठाव, ट्रांसपोर्टिंग, ट्रीटमेंट की जानकारी देने को कहा। बैठक में कई औद्योगिक इकाईयों की कॉलोनियों द्वारा कचरा को खुले में जलाने की शिकायत मिलने की बात कहीं गई। इस पर उपायुक्त ने कमेटी द्वारा जांच कर सत्यापित रिपोर्ट अगली बैठक में प्रस्तुत करने को कहा। वहीं, जिन शिकायतों का सत्यापन हुआ है और मामला सही पाया गया है उन औद्योगिक इकाईयों को नोटिस करने एवं उसकी सूचना राज्य प्रदूषण बोर्ड एवं संबंधित विभाग को भी प्रेषित करने का संबंधित अधिकारी को निर्देश दिया।

नौकरी के लिए दर-दर भटक रहे बिरहोर बेरोजगार, डीसी से लगाई मदद की गुहार

संवाददाता
बोकारो : जिले के गोमिया प्रखंड में रहने वाले आदिम जनजाति बिरहोर के बेरोजगारों ने उपायुक्त कुलदीप चौधरी से मिलकर आदिम जनजाति नियम के तहत नियोजन के लिए प्रकाशित सूची के आधार पर होमगार्ड जवानों की बहाली में नौकरी देने की मांग की है। बोकारो जिले के गोमिया प्रखंड में विलुप्त होती आदिम जनजाति बिरहोर समुदाय के इन बेरोजगारों ने उपायुक्त को लिखे पत्र में कहा है कि बोकारो स्टील प्लांट के सीएसआर विभाग ने समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के उद्देश्य से उन्हें अपने होस्टल में रखकर उन्हें निःशुल्क भोजन, वस्त्र, चिकित्सा, पाठ्य सामग्रियां आदि की सुविधा प्रदान की और उन्हें मैट्रिक, इन्टर, आईटीआई करवाकर वर्ष 2012 में जिला प्रशासन को सुपूर्द कर दिया। आदिम जनजाति के इन बेरोजगारों ने बताया कि आजादी के बाद बोकारो जिला में बिरहोर जनजाति समुदाय से सरकार के सौजन्य से किसी महिला या पुरुष ने मैट्रिक पास नहीं किया था। जबकि, बोकारो स्टील प्रबंधन ने उन्हें सहयोग देकर वर्ष 2010 में मैट्रिक पास कराया। इसके बाद बोकारो जिला प्रशासन की ओर से सभी बच्चों को चतुर्थ श्रेणी में रिक्त पदों पर नियुक्ति हेतु वरीयता सूची में शामिल किया गया। लेकिन, उस सूची के आधार पर आज तक किसी की नौकरी नहीं हुई। कुछ बच्चे अपनी योग्यता के आधार पर नौकरी पा चुके हैं। जबकि, 12 वर्षों तक बोकारो स्टील प्रबंधन द्वारा दी गई सुख-सुविधाओं के बाद भी वे लोग उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र गोमिया के जंगलों में भटकने को विवश हैं। सरकार की तरफ से उन्हें कोई सहयोग नहीं मिल पा रहा है। इन बेरोजगारों ने उपायुक्त से प्रकाशित सूची के आधार पर जिले में होमगार्ड की नियुक्ति में प्राथमिकता देने का अनुरोध किया है।

नाराजगी जनसंपर्क अभियान के दौरान बोकारो एयरपोर्ट का भाजपाइयों ने लिया जायजा

सरकार की उदासीनता से नहीं चालू हो पा रहा हवाई अड्डा : बिरंची

संवाददाता
बोकारो : 30 मई से 30 जून तक चल रहे जनसंपर्क महा अभियान के तहत बोकारो विधायक बिरंची नारायण के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं ने बोकारो हवाई अड्डा का दौरा किया। इस क्रम में विधायक बिरंची नारायण ने कहा कि मोदी सरकार के 9 वर्षों की उपलब्धि को लेकर विधानसभा स्तर से लेकर बूथ स्तर तक जनसंपर्क अभियान चलाया जा रहा है। 9 वर्षों में बोकारो विधानसभा क्षेत्र की सबसे बड़ी उपलब्धि उड़ान योजना के तहत बोकारो में एयरपोर्ट का परिचालन किया जाना है। उन्होंने कहा कि 70 करोड़ रुपये की लागत से बना यह एयरपोर्ट केंद्र सरकार की ओर से बोकारो विधानसभा में सबसे बड़ी उपलब्धि है।

विधायक ने कहा कि आज बोकारो एयरपोर्ट से परिचालन शुरू होने में राज्य की सरकार सबसे बड़ा बाधक बनी हुई है। बोकारो एयरपोर्ट शुरू होने में देरी का कारण राज्य सरकार द्वारा जरूरतों को पूरी नहीं किया जाना है। परंतु अब तक यह कार्य पूर्ण नहीं हुआ, जिसके कारण लाइसेंस मिलने मे देरी हो रही है। उन्होंने कहा- हेमंत सोरेन नहीं चाहते कि बोकारो के लोग हवाई यात्रा करें। उन्होंने राज्य की वर्तमान सरकार को विकास विरोधी बताया।

बोकारो विधायक ने कहा कि विगत विधानसभा सत्र में भी सदन के माध्यम से उन्होंने सरकार से सवाल किया था कि बोकारो एयरपोर्ट का परिचालन कब शुरू किया जाएगा। तब सरकार ने जवाब दिया था कि जल्द कमेटी बनाकर एक उच्च स्तरीय बैठक की जायेगी, जिसमें संबंधित अधिकारी मौजूद रहेंगे। मगर सात महीने बीतने पर भी अब तक न बैठक हुई और न परिचालन शुरू हो सका।

इस दौरा में उनके साथ संजय त्यागी, अशोक पप्पू, माथुर मंडल, महेंद्र राय, धीरज झा, सुजीत चकवर्ती, राधेकान्त सिंह, विनय किशोर, मनोज सिंह, मन्तोष ठाकुर, अविनाश झा, सुनील सिंह सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता शामिल थे।

हफ्ते की हलचल

सेवानिवृति के बाद खुशहाल जीवन जरूरी : पांडेय

चंद्रपुरा : दामोदर घाटी निगम, चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र में पदस्थापित डीवीसी के चार कर्मी 31 मई को सेवानिवृत्त हो गए। उनकी सेवानिवृत्ति पर डीवीसी प्रबंधन द्वारा सम्मान सह-सेवानिवृत्ति समारोह का आयोजन कर उन्हें उपहार एवं

पौधा भेंट किया गया और उनके सुखमय जीवन की कामना की गई। समारोह को संबोधित करते हुए वरीय महाप्रबंधक एवं परियोजना प्रधान सुनील कुमार पांडेय ने कहा कि सेवानिवृत्ति सेवा काल के बाद की एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया से सभी को एक दिन गुजरना होता है सेवानिवृत्ति के बाद सुखमय जीवन जीने के लिए पूरा प्रयास किया जाना चाहिए। उन्होंने सेवानिवृत्त कर्मियों की कार्यशैली की प्रशंसा की और कहा कि ऐसे कर्मियों के सहयोग से ही डीवीसी आज उन्नति की ओर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने सेवानिवृत्त कर्मी डोली महतो, छोटेलाल सिंह, कबरुद्दीन और महावीर गोप के सुखमय जीवन की कामना की। महाप्रबंधक (परिचालन) देवव्रत दास, पवन कुमार मिश्रा, यूनियन के नेता सुभाष दुबे, मनोज कुमार झा, यदु महतो आदि ने भी इसे संबोधित किया। समारोह का संचालन प्रदीप कुमार श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम में प्रबंधक रोशन कुमार सिंह, रविंद्र कुमार, अक्षय कुमार, मोइनुद्दीन आदि शामिल थे।

जीजीईएसटी में कौशल विकास प्रशिक्षण का समापन

बोकारो : गुरु गोविन्द सिंह एजुकेशनल सोसायटीज टेक्निकल कैंपस, इंजीनियरिंग और मैनेजमेंट कॉलेज, बोकारो में ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन स्टूडेंट्स स्किल डेवलपमेंट प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर कॉलेज के निदेशक डा. प्रियदर्शी जरूहार एवं ट्विनटेक इंजीनियरिंग एंड डिजाइन टेक्नोलॉजी प्रा. लि., उड़ीसा के निदेशक निरंजन के हाथों 290 छात्रों को प्रशस्ति पत्र व प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। इनमें से 90 छात्रों ने प्रमाण-पत्र प्रत्यक्ष प्राप्त किए और एमबीए, बीबीए तथा बीसीए के 200 छात्रों को ऑनलाइन सर्टिफिकेट दिये गये, जिन्होंने 4 दिवसीय एजीक्यूटिव सर्टिफिकेट प्रोग्राम में हिस्सा लिया था। कॉलेज के निदेशक डा. प्रियदर्शी जरूहार ने बताया कि यह कार्यक्रम छात्रों को बेहतर और विशिष्ट रूप से रोजगार-परक बनायेगा। इस कार्यक्रम में अखिल भारतीय स्तर पर प्रशिक्षकों ने हिस्सा लिया। संस्थान अध्यक्ष तरसेम सिंह एवं सचिव सुरेंद्र पाल सिंह ने छात्रों के उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए उन्हें बधाई दी।

यूपीएससी में सफल श्रुति को महासभा ने किया सम्मानित

बोकारो : बोकारो के चीराचास स्थित शिवम अपार्टमेंट में श्रुति अग्रवाल को सिविल सेवा परीक्षा में ऑल इंडिया 506 रैंक लाने पर अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा व अग्रवाल परिवार की

ओर से सम्मानित किया गया। श्रुति के पिता डॉ. परमांशु प्रकाश अग्रवाल ने बताया कि श्रुति ने दसवीं तक की पढ़ाई गिरिडीह कार्मेल स्कूल, 12वीं की पढ़ाई बोकारो के चिन्मया विद्यालय से तथा ग्रेजुएशन की पढ़ाई दिल्ली से की। श्रुति तीन भाई बहन है। मां संगीता कुमारी हाउसवाइफ हैं। श्रुति के पिता ने कहा बेटी ने मेरे और पूरे परिवार की मान बढ़ाया है। अपने संबोधन में अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने कहा कि श्रुति ने अपने परिवार का ही नहीं, पूरे अग्रकुल का मान बढ़ाया है। इनकी जितनी भी तारीफ की जाए, वह कम है। उन्होंने कहा कि श्रुति ने एक नई पहचान बनाई है, खुद का रौब बढ़ाया है और हम सबकी शान बढ़ाई है। इस अवसर पर अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा की ओर से उन्हें अभिनंदन पत्र भी भेंट किया तथा श्रुति के माता-पिता व उनके परिवार को बधाई दी।

नव-नामांकित विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों का सम्मिलन

बोकारो : चिन्मय विद्यालय में 2023 में नव नामांकित विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों के स्वागत में सम्मिलन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत वैदिक रीति से हुई। सभी सम्मानित अतिथि स्वामिनी संयुक्तानंद सरस्वती आचार्या चिन्मय मिशन केन्द्र बोकारो), सचिव महेश त्रिपाठी, प्राचार्य सूरज शर्मा व विशिष्ट अतिथि यूपीएससी में सफल वर्षा (रैंक-353), श्रुति (रैंक-506) आदि का स्वागत पुष्प गुच्छ देकर किया गया। दीप प्रज्जवलन के बाद संगीत-नाटक विभाग द्वारा गणपति वंदना नृत्य व स्वागत गान प्रस्तुत किया गया। प्राचार्य ने कहा कि चिन्मय विद्यालय हमेशा आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर कठिन कर्म के सिद्धांत को मानता है और इसी सिद्धांत को अपनाकर शिक्षक व प्रबंधान छात्रों के चरित्र निर्माण से ले कर उनके ज्ञान व कौशल के विकास में सतत लगे रहते हैं। इसका परिणाम है कि इस साल भी आईआईटी, जेईई एडवांस्ड के लिए चयनित हुए हैं और 10वीं व 12वीं में शानदार परिणाम आया है। नीट में भी हमारी उपलब्धि शानदार होगी। स्वामिनी संयुक्तानंद सरस्वती ने कहा कि मन, बुद्धि, विवेक, शरीर, वाणी एवं सभी ज्ञानेन्द्रियों पर नियंत्रण रखिए। शरीर के स्तर पर नियंत्रण रखना अति आवश्यक है। हमेशा निरर्थक बातचीत करने से ऊर्जा का क्षरण होता है। कार्यक्रम के सूत्रधार सुनील कुमार व अन्य ने यूपीएससी में सफल पूर्ववर्ती छात्रा वर्षा व श्रुति शॉल ओढ़ाकर व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

बाबाधाम में शीघ्र दर्शन शुल्क में बढ़ोत्तरी का फैसला वापस

पण्डा धर्मरक्षिणी सभा के विरोध के बाद मुख्यमंत्री ने किया हस्तक्षेप

विशेष संवाददाता

देवघर : देवघर के बाबा बैद्यनाथ शिवलिंग के शीघ्र दर्शन शुल्क बढ़ोतरी मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की दखलंदाजी के बाद रुक गई है। उपायुक्त मंजुनाथ भजंत्री ने अपने फैसले को वापस ले लिया है। दरअसल, पंडा धर्मरक्षिणी सभा ने उपायुक्त के फैसले की जोरदार खिलाफत की है और संगठन के महामंत्री कार्तिक नाथ ठाकुर ने मुख्यमंत्री और मुख्य सचिव को पत्र लिखकर इसका विरोध किया था। उन्होंने सरकार से इस मामले में तुरंत हस्तक्षेप की मांग की थी। कार्तिक नाथ ठाकुर ने कहा कि शीघ्र दर्शन शुल्क को दोगुना करने का डीसी का फैसला एकतरफा था, जिसका विरोध हो रहा था।

उल्लेखनीय है कि बाबा बैद्यनाथ शिवलिंग द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक हैं। इन्हें कामना लिंग भी कहा जाता है। पुराणों के मुताबिक देवघर स्थित बाबा बैद्यनाथ शिवलिंग खुद रावण के द्वारा स्थापित हैं। जिला प्रशासन ने वर्ष 2010 से श्रद्धालुओं को शीघ्र दर्शन के नाम पर शुल्क लगाया था। इसके मुताबिक 250 रुपए सामान्य दिनों के लिए और 500 रुपए विशेष दिनों के दौरान है। इसके अलावा जो श्रद्धालु बगैर कूपन कटवाए दर्शन-पूजन करना चाहें, वे सामान्य कतार में लगकर कर सकते हैं।

उपायुक्त ने इस शुल्क में बढ़ोतरी कर इसे दोगुना अर्थात 500 और 1000 रुपए करने का फैसला किया था। उपायुक्त ने इस नए फरमान को बाकायदा 31 मई से लागू करने का फैसला कर लिया था। इस सन्दर्भ में उपायुक्त ने अपना आदेश जारी करने से दो दिन पूर्व यहां की व्यवस्था का मुआयना भी किया था। जानकार बताते हैं कि आम दिनों में शीघ्र दर्शन के लिए लगभग पांच हजार श्रद्धालु आते हैं। जबकि, सावन महीने में यह संख्या लाखों में बढ़ जाती है और वीआईपी के लिए दर्शन की सुविधा बंद हो जाती है। सावन में प्रत्येक साल यहां जलाभिषेक करने के लिए एक महीने तक लाखों कांवड़ियों का तांता लगा रहता है। इस साल सावन दो महीने है। पुरुषोत्तम महीना है। यानी जुलाई के प्रथम सप्ताह से 31 अगस्त तक यहां कांवड़ियों का जन-सैलाब उमड़ने की उम्मीद है। कांवरिये बिहार के भागलपुर जिले के सुल्तानगंज में उत्तरवाहिनी गंगा से गंगाजल भरकर पैदल लगभग सौ किलोमीटर की यात्रा कर बाबाधाम आकर जलाभिषेक करते हैं।

पंडों का आरोप है कि उपायुक्त 31 मई से शीघ्र दर्शन के शुल्क में बढ़ोतरी करना चाहते थे। हालांकि, मंदिर में श्रद्धालुओं के लिए कोई खास सुविधा नहीं है। बल्कि, पुलिस की बेंत और धक्का-मुक्की से ही थके-हारे दर्शनार्थियों का स्वागत होता है। दरअसल, बाबाधाम में पुलिस और प्रशासन की ज्यादती के मामले पहले भी सुर्खियों में रहे हैं। क्योंकि, वर्दीधारी पुलिस के जवानों के अतिरिक्त प्रशासन के आला अधिकारियों को भी यहां श्रद्धालुओं पर डंडे बरसाकर उनकी आस्था पर कुठाराघात करते देखा गया है।

यह तिजोरी भरने का षडयंत्र : पासवान

देवघर जिला परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष एवं युवा नेता संतोष पासवान ने जिला प्रशासन द्वारा लिये गये निर्णय को पूरी तरह गलत बताया। उन्होंने कहा कि बाबा बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग देश-विदेश में हिन्दू धर्मावलम्बियों के लिए आस्था का एक प्रमुख केन्द्र है। बाबा बैद्यनाथ को मनोकामना लिंग माने जातें है, जो सबकी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। लेकिन, यहां शीघ्र दर्शन के नाम पर लूट मची है। यह सरकार द्वारा अपनी तिजोरी भरने का एक षडयंत्र है। प्रशासन और राज्य सरकार को इसकी राशि कम करनी चाहिए, जबकि प्रशासन की ओर से इसे बढ़ाने का षडयंत्र किया गया है। यहां व्यवस्था के नाम पर भी कुछ नहीं है। शीघ्र दर्शनम के नाम पर लोग घंटों लाइन में लगे रहते हैं, जबकि सामान्य दर्शनार्थी उनसे पहले बाबा का दर्शन-पूजन कर लेते हैं। एक परिवार को लोग अगर चार-पांच की संख्या में आते हैं तो उन पर बहुत बड़ा आर्थिक बोझ बढ़ेगा। सरकार को इस पर विचार करना चाहिए।

एक्यूपंक्चर स्पाइन विशेषज्ञ डॉ. हाजरा को फिर मिली डॉक्टरेट की मानद उपाधि

इंदौर में मां भुवनेश्वरी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय ने किया था समारोह आयोजित

संवाददाता

रांची : एक्यूपंक्चर की पद्धति से स्पाइन चिकित्सा के क्षेत्र में झारखंड को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने वाले प्रख्यात चिकित्सक डॉ. राजेन्द्र कुमार की उपलब्धियों की फेहरिस्त में एक और नई कड़ी जुड़ गई है। डॉ. हाजरा को इंदौर में डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया है। मां भुवनेश्वरी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, इन्दौर में एक भव्य पीएचडी सह सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें रांची और देश के जाने-माने एक्यूपंक्चर चिकित्सक डॉ. राजेन्द्र कुमार हाजरा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर डॉ. हाजरा जहां स्वयं सम्मानित किए गए, वहीं उनके हाथों देश-विदेश के चिकित्सकों और विद्वानों को पीएचडी के साथ-साथ उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मान-पत्र दिया गया। मौके पर विश्वविद्यालय की वाइस चांसलर डॉ. दीप्ति भदौरिया सहित अन्य कई गणमान्यजन उपस्थित रहे। डॉ. हाजरा मां भुवनेश्वरी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) के डायरेक्टर ऑफ एडवाइजरी, यूनिवर्सिटी काउंसिल भी हैं। उल्लेखनीय है कि डॉ. हाजरा देश ही नहीं, पूरे विश्व में अपने कार्यों के लिए जाने जातें हैं। उन्हें एक्यूपंक्चर चिकित्सा विज्ञान के उनके अनुभवों को देखते हुए इसके पहले चार-चार बार मानद पीएचडी (डॉक्टरेट) की उपाधि प्रदान दी गई है। यह पांचवां अवसर था।

हाल ही में मिला 'इंडिया ब्रांड आइकॉन 2023 अवॉर्ड'

डॉ. हाजरा को हाल ही में एक्यूपंक्चर पद्धति से इलाज के लिए उन्हें मुंबई में 'इंडिया ब्रांड आइकॉन 2023 अवॉर्ड' से नवाजा गया है। मेडिकल कैटेगरी में उन्हें यह राष्ट्रीय सम्मान मिला। एक भव्य समारोह के दौरान विश्वविख्यात आस्ट्रेलियन लिजेंड क्रिकेटर ब्रेट ली ने उन्हें सम्मानित किया। डॉ. हाजरा को ट्रस्टेड एक्यूपंक्चर स्पाइन स्पेशलिस्ट आफ रांची, झारखंड ब्रांड आइकॉन 2023 के रूप में नवाजा गया।

भ्रष्टाचार के चंगुल में फंसा बभनगामा हाई स्कूल शिक्षा अधिकार नियम की उड़ रहीं धज्जियां

ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से की लिखित शिकायत

सतीश कुमार झा

सीतामढ़ी : सीतामढ़ी रीगा प्रखंड क्षेत्र की गणेशपुर बभनगामा पंचायत स्थित श्री बलभद्र हाई स्कूल में अनियमितता का मामला इन दिनों चर्चा का विषय बना हुआ है। इस संबंध में पंचायत के पूर्व सरपंच रामनंदन राय, ग्रामीण सुनील कुमार, राकेश सिंह, मनोज राय, जमींदार ठाकुर, शंकर राय, उपेंद्र राय, अरुण कुमार सिंह, गंगा साह, गौरव सिंह समेत दर्जनों लोगों ने खुलेआम हाई स्कूल में चल रहे भ्रष्टाचार की लिखित शिकायत जिला शिक्षा पदाधिकारी से की है।

मिथिला डायरी

ग्रामीणों ने अपनी शिकायत में विद्यालय के प्रधानाध्यापक पर निजी हित साधने का आरोप लगाते हुए कहा कि स्कूल का पठन-पाठन बिल्कुल चौपट हो गया है। वित्तीय संबंधित अनियमितताएं के बारे में ग्रामीणों ने मनमानी का आरोप लगाया। यह भी कहा कि स्कूल में बने भवन का उपयोग एवं उसके कमरे का रख-रखाव और साफ सफाई नहीं हो पा रही है। चारों तरफ गंदगी ही नजर आती है। स्कूल के पहले से बने भवन देखरेख के अभाव में जर्जर होकर ध्वस्त हो रहे हैं।

उपेक्षा का शिकार है ऐतिहासिक विद्यालय

उल्लेखनीय है कि प्रखंड का ऐतिहासिक श्री बलभद्र उच्च विद्यालय बभनगामा सूबे के टॉपर स्कूलों में से रहा है। कभी प्रतिष्ठित संयुक्त बिहार के नेतरहाट की बराबरी का परीक्षाफल देने वाला यह स्कूल इन दिनों उपेक्षा का शिकार होकर रह गया है। यह विद्यालय वर्ष 1928 ईस्वी में बभनगामा गांव के प्रतिष्ठित किसान बलभद्र प्रसाद सिंह के नाम पर स्थापित किया गया था। उक्त विद्यालय में सभी तरह के सुविधाओं विज्ञान प्रयोगशाला,पुस्तकालय एवं सुसज्जित छात्रावास की व्यवस्था की गई थी, जिस छात्रावास में सैकड़ों की संख्या में बच्चों पठाई करते थे। यह विद्यालय पढ़ाई-लिखाई खेलकूद गतिविधिया एवं अनुशासन के लिए पूरे बिहार में प्रसिद्ध रहा है। इस विद्यालय के प्रांगण में तरह तरह के पेड़-पौधे लगाए गए थे। बागमती नदी की कल-कल बहती धारा के बगल में प्राकृतिक सौंदर्य का नजारा भी अद्भुत रहा है। यहां अध्ययन करने वाले छात्र देश एवं विदेश के बड़े-बड़े उच्च पदों पर आसीन रहे हैं। इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक राजेश्वरी प्रसाद सिंह को राष्ट्रपति पदक से नवाजा भी गया था।

अत्याधुनिक भवन के बावजूद व्यवस्था चौपट

1965 ई. में स्कूल से पास किये मझौरा गांव निवासी कर्नल मनेंद्र प्रसाद सिंह ने स्कूल की स्थिति पर बताया कि पहले इतना अत्याधुनिक बिल्डिंग नहीं होने के बावजूद बच्चों देश में नाम रौशन को लेकर प्रधानाध्यापक को राष्ट्रपति के द्वारा सम्मानित किया गया था। इस स्कूल से निकलकर बाहर जाने पर लोग सम्मानित दृष्टि से देखते थे। यह रुतबा हुआ करता था। वहीं, श्री कर्नल ने बताया कि आज के समय मे सारी फैसिलिटी बढ़ने के बावजूद स्कूल की पढ़ाई-लिखाई समेत सारी व्ययवस्था खत्म हो गई है।

साधक जीवन में दैनिक चर्या आवश्यक

गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली

जब व्यक्ति साधना के क्षेत्र में पदार्पण करता है तो उसे अपनी संपूर्ण जीवन चर्या को भी साधना आवश्यक होता है। केवल मंत्र जप अथवा पूजन विधान द्वारा ही साधना पूर्ण नहीं हो जाती। साधनाओं में सफलता के लिए जहां मन की शुद्धि आवश्यक है, वहीं दैनिक कार्यों में भी शुचिता का महत्व होता है। शरीर का शुद्ध होना भी उतना ही आवश्यक है, जितना कि मन का। इसीलिए साधकों के लिए विशेष दिनचर्या का पालन करना एवं सधी हुई दिनचर्या का पालन करना भी महत्वपूर्ण होता है। प्रातः काल उठना, समय से मल विसर्जन, दंतधावन, स्नान आदि का साधक के जीवन में क्या महत्व है, इसी को स्पष्ट करता यह विवेचनात्मक आलेख...!

सूर्योदय से पूर्व शय्या त्याग आवश्यक

निद्रा त्याग हेतु साधकों के लिए ब्रह्म मुहूर्त ही श्रेष्ठ समय है।

रात्रेः पश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः।
स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने।।

दिन भर के थके प्राणी, पशु-पक्षी थककर रात्रि में विश्राम लेते हैं और प्रातः होने पर पुनः चैतन्य हो जाते हैं। प्रकृति से जुड़े सभी पशु-पक्षी प्रकृति के संकेत को समझकर सूर्योदय से पूर्व ही निद्रा विहीन हो जाते हैं। मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जिसे अलार्म घड़ी की आवश्यकता पड़ती है। प्रातः काल होते ही कमल खिल उठते हैं, पक्षी अपने कलरव से उपवनों को गुंजायमान कर देते हैं, शीतल, मन्द समीर प्रवाहित होने लगता है, उस समय प्रकृति वास्तव में तरोताजा होती है।

साधनात्मक दृष्टि से ब्रह्म मुहूर्त के समय वातावरण में विशेष चैतन्यता व्याप्त रहती है। उस समय वातावरण में प्राण तत्व का विशेष रूप से संचरन रहता है और यही प्राण तत्व जीवन की मूलभूत ऊर्जा भी है। इस प्राण तत्व का मानव जीवन पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। प्रातः बेला में उठने वाले व्यक्ति प्रायः चैतन्य और निरोगी रहते हैं, यह निर्विवाद तथ्य है।

अध्यात्म जीवन में प्राण तत्व का विशेष महत्व है। इसीलिए ब्रह्म मुहूर्त का यह काल साधना, उपासना, जप, ध्यान आदि के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इस समय मन से उठने वाली प्रत्येक तरंग का सम्बन्ध सीधा वातावरण में व्याप्त देव शक्तियों से होता है और मंत्र जप उन देवताओं तक पहुंचता है। सद्गुरुदेव ने प्रायः अपने प्रवचनों में शिष्यों को प्रातः काल 5:00 से 6:00 के मध्य गुरु पूजन सम्पन्न करने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा है- 'यदि तुम दीक्षा प्राप्त शिष्य हो और इस प्रातः बेला में किसी भी प्रकार से गुरु पूजन सम्पन्न करते हो, गुरु चित्र के सामने कुमकुम, अक्षत, धूप आदि लगाकर गुरु मंत्र का जप कर अपनी मनोकामना व्यक्त करते हो, तो ऐसा संभव ही नहीं कि मुझे तुम्हारी आवाज सुनाई न दे, क्योंकि प्रातः 5:00 से 6:00 के मध्य सूक्ष्म रूप से मैं प्रत्येक शिष्य, जो उस समय साधनारत होता है, उसके समक्ष उपस्थित होता हूं और उसे मेरा आशीर्वाद प्राप्त होता है।'

प्रातः बेला में प्रकृति मुक्त हस्त से स्वास्थ्य, बुद्धि, मेधा, प्रसन्नता और सौन्दर्य की अपार राशि लुटाती है। इस समय बहने वाले पवन में संजीवनी शक्ति पूर्ण रूप से आप्लावित रहती है। रात्रि में चन्द्रमा की शीतल किरणों का पृथ्वी पर विकीर्णन होता है, जिसमें अमृत रश्मियां समाहित होती हैं। रात्रि में चन्द्रमा की इन्हीं अमृत रश्मियों से पवन अमृततुल्य हो जाता है और प्रातः बेला में अपना अमृत या संजीवनी प्राण-तोषक प्रभाव भी

बिखेरता है, जिससे मन एवं आत्मा प्रफुल्लित हो जाती है।

यों भी सामान्य विज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो भी प्रातः बेला की वायु का विशेष महत्व है। सामान्यतः वायुमंडल का 21% भाग ऑक्सीजन, अर्थात शुद्ध प्राणपद वायु द्वारा निर्मित होता है, परंतु प्रातः काल में ऑक्सीजन का प्रतिशत दिवस के अन्य किसी समय की अपेक्षाकृत अधिक हो जाता है।

जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, वह सभी सूर्योदय के पूर्व ही उठते रहे हैं। इसलिए साधक जीवन में सूर्योदय के पूर्व उठना तो और भी आवश्यक है।

प्रातः उठने का प्रयोग

आलस्य के कारण व्यक्ति प्रातः बेला में उठता नहीं है और अलसाया सा पड़ा रहता है। इसके लिए रात्रि में सोने से पूर्व यदि व्यक्ति यह संकल्प लेकर सोए कि कल प्रातः अमुक समय पर नींद खुल जाए, तो निश्चय ही उस समय पर नींद खुलती है। यह अनुभूत प्रयोग है, जिसका साधक के मन से सीधा सम्बन्ध होता है। ... और यदि पहले दिन नींद खुलने पर आलस्य का आश्रय नहीं लिया गया तो फिर कुछ ही दिनों में सूर्योदय के पूर्व उठने की शुभ आदत पड़ जाएगी।

शास्त्रों में दिन में दो बार शौच का निर्देश

आयुर्वेद शास्त्रों के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को दिन में दो बार शौच जाना स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभकारी माना गया है। प्रातः काल शय्या से उठने के पश्चात और फिर दूसरी बार सायंकाल 4:00 या 5:00 बजे के लगभग। दो बार शौच जाने से शरीर की आंतों में जो भी मल इकट्ठा होता है, वह निकलता जाता है। इस प्रकार शरीर निर्मल बना रहता है, जिससे मन में एक प्राणशक्ति सतत रूप से संचरित रहती है, कार्य करने में मन लगता है और एक आनंदप्रद स्थिति बनी रहती है। जप, ध्यान आदि में भी मन तभी लगता है, जब शरीर निर्मल हो। शहरों में अधिकांश व्यक्तियों को कोष्टबद्धता (कब्ज) की शिकायत रहती है। अनियमित शौच से अपशिष्ट मल काली-काली गांठें बनकर आंतों में चिपकता जाता है और फिर यह बीमारी का रूप ले लेता है, जिससे हर समय थकान, सिरदर्द और उदासी बनी रहती है। दो बार शौच से आंतों की अच्छी सफाई हो जाती है। यों भी योगासन की अनेक विधियां हैं, जिनके द्वारा साधक शरीर शुद्धि करते हैं।

साधना के पूर्व स्नान क्यों आवश्यक?

प्रतिदिन प्रातः स्नान करके शुचि होकर साधना, पूजन आदि करने का नियम बताया गया है। स्नान क्रिया से तात्पर्य शारीरिक शुद्धि का है।

त्वचा में असंख्य छोटे-छोटे छिद्र होते हैं, जिनके अन्दर से पसीना निकलता है। वायु के स्पर्श में आकर यह पसीना सूख जाता है और मैल बनकर त्वचा छिद्रों में रहकर सूख जाता है। इस मैल के रहते साधना कर्म में चैतन्यता संभव नहीं है। पूज्य गुरुदेव जब चेतना मंत्र देते हैं- 'ऊँ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम चैतन्य जागरण ह्रीं ऊँ नमः' तो आशय यह होता है कि साधक में इतनी अधिक चेतना आ जाए कि उसके एक-एक रोम से मंत्र का उच्चारण हो, एक-एक रोम से गुंजरण होने लगे। परन्तु यदि उसके रोम छिद्रों में पहले से ही मैल भरा हुआ है, तो इस मंत्रात्मक ऊर्जा का, चैतन्यता के प्रत्येक रोम-रोम में स्थापन की बात तो बहुत दूर की बात है।

साधना से पूर्व स्नान कर लेने से जहां रोम छिद्रों का मैल निकल जाता है, वहीं शारीरिक ऊष्मा से त्वचा में जल तत्व की जो कमी उत्पन्न हो गई थी, वह भी पूरी हो जाती है। दैनिक चर्या का साधक जीवन में उतना ही महत्व है, जितना की विधि-विधान या शुद्ध मंत्रोच्चार का।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

कई मर्ज की दवा है गुनगुने पानी के साथ काली मिर्च का सेवन

घर के मसालों के डिब्बे में हमेशा रहने वाली काली मिर्च केवल मसालों का ही भाग नहीं है। इसमें औषधीय गुण भी मौजूद हैं। सुबह खाली पेट गुनगुने पानी के साथ काली मिर्च के पाउडर का सेवन करने से आपको कई तरह के सेहत लाभ मिल सकते है। आइए, जानते हैं इन्ही लाभों के बारे में -

1). अगर आप शरीर की कैलोरी बर्न करना व वजन कम करना चाहते हैं, तो काली मिर्च का पाउडर बनाकर गुनगुने पानी के साथ पिए। इससे शरीर में बढ़ा हुआ फैट कम होने में मदद मिलती है।

2). अगर आपको जुकाम हो गया है, तो आप काली मिर्च का पाउडर बनाकर गर्म दूध में मिलाएं और पिए। कुछ दिन ऐसा करने से आपको छींक आना और जुकाम से राहत मिलेगी।

3). जिन लोगों को कब्ज की समस्या रहती है, उन्हें एक कप पानी में नींबू का रस, काली मिर्च का पाउडर और नमक डालकर पीना चाहिए। इससे गैस व कब्ज की समस्या से कुछ ही दिनों में राहत मिलेगा।

4). अगर आपको स्टेमिना कम महसूस होता है और इसे बढ़ाना चाहते हैं, तो गुनगुने पानी के साथ काली मिर्च का सेवन करें। इससे शरीरिक क्षमता बढ़ती है।

5). अगर आपको डिहाइड्रेशन की समस्या रहती है, तो भी आप काली मिर्च को गुनगुने पानी के साथ पिएं। ऐसा करने से आपको समस्या से राहत मिलेगी।

(साभार : जीवन मंत्र)

कोरोमंडल रेल हादसा... कहीं साजिश तो नहीं ?

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : कोरोमंडल रेल हादसा 21वीं सदी की सबसे बड़ी रेल त्रासदी साबित हुई। 288 लोगों की मौत और 1000 से अधिक लोगों का घायल होना अपने-आप में बहुत बड़ी घटना है। वैसे तो घटना के पीछे के पहली वजह सिग्नल संबंधी गलती मानी जा रही है, परंतु इसके पीछे अब साजिश की बातें भी सामने आ रही हैं। इतने बड़े हादसे को अंजाम दिलाकर कहीं किसी की नापाक मंशा तो नहीं थी? यह सवाल भी अब गूंज रहा है। पूर्व रेल मंत्री दिनेश त्रिवेदी ने कहा कि यह दुर्घटना कैसे हुई, ये इंक्वायरी कमीशन की रिपोर्ट ही बता सकती है और रेलवे सेफ्टी बोर्ड भी उसमें अपनी राय देगा, परंतु इस दर्दनाक हादसे में किसी भी साजिश के एंगल को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

यूपीए-2 में रेल मंत्री रहे दिनेश त्रिवेदी ने कहा कि पूरे देश की संवेदना इस वक्त उन परिवारों के साथ है जिन्होंने अपनो को खोया है। इस सरकार (केंद्र सरकार) की प्राथमिकता ज्यादा से ज्यादा रेस्क्यू करने की है। इसके अलावा सरकार अस्पताल में मरीजों का इलाज और रेलवे ट्रैक को सामान्य करने की दिशा में काम कर रही है। कहा कि तीन ट्रेनों का एक साथ डीरेल होना बहुत डरावना है। उन्होंने कहा, 'साल 2010 में ऐसा एक हादसा हुआ था, तब भी ट्रेन आकर डीरेल हो गई थी। इस हादसे में किसी साजिश के एंगल को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।' बहरहाल, यह एंगल वास्तव में जांच का विषय है।

दशकों बाद भी नहीं सुधरे हालात... पिछले कुछ हादसे एक नजर में

बड़े रेल हादसे यह बता रहे हैं कि आज भी हमारी रेल व्यवस्था दशकों पुरानी स्थिति में है। विगत कुछ रेल हादसों पर नजर डालते हैं, जो इस प्रकार से हैं-

जून 1981 : बिहार में 6 जून 1981 को एक ट्रेन मानसी और सहरसा के बीच पुल पार करते समय पटरी से नीचे उतर गई थी। उसके सात डिब्बे कोसी नदी में समा गए थे। इस दुर्घटना में 800 यात्रियों की मौत हो गई थी, जो अब तक भारत और दुनिया के सबसे खतरनाक रेल दुर्घटनाओं में से एक है।

अगस्त 1995 : दिल्ली से कानपुर के बीच चलने वाली पुरुषोत्तम एक्सप्रेस उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद के पास खड़ी कालिंदी एक्सप्रेस से टकरा गई थी, जिसमें 360 से अधिक यात्री मारे गए थे।

26 नवंबर 1998 : जम्मूतवी सियालदह एक्सप्रेस पंजाब खन्ना में अमृतसर जाने वाली फ्रंटियर गोल्डन टेंपल के साथ हादसे का शिकार हुई थी। पटरी टूटी होने के कारण स्वर्ण मंदिर मेल ट्रेन के तीन डिब्बे पटरी से उतर गए थे, वहीं जम्मूतवी सियालदह एक्सप्रेस के छह डिब्बे बेपटरी हो गए थे। इस हादसे में 280 से अधिक यात्रियों की जान चली गई थी।

28 मई 2010 : मुंबई जाने वाली हावड़ा-कुर्ला लोकमान्य तिलक ज्ञानेश्वरी सुपर डीलक्स एक्सप्रेस पश्चिम बंगाल के पश्चिम मिदनापुर जिले में बेपटरी हो गई थी। इसके बाद एक मालगाड़ी ने उसमें टक्कर मार दी, जिसके बाद 235 यात्रियों की जान चली गई थी।

9 सितंबर 2002 : हावड़ा-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस गया और डेहरी ऑन सोन स्टेशन के बीच रफीगंज स्टेशन के पास बेपटरी हो गई थी, जिसमें 130 से अधिक लोग मारे गए थे। ऐसा कहा जाता है कि जिस ट्रक पर वह ट्रेन चल रही थी वह ब्रिटिश जमाने का था।

2 अगस्त 1999 : अवध असम एक्सप्रेस और ब्रह्मपुत्र मेल की टक्कर में 268 लोगों की मौत हो गई थी।

अक्टूबर 2005 : आंध्र प्रदेश के वेलुगोंडा के पास एक पैसेंजर ट्रेन के कई डिब्बे पटरी से उतर गए थे, जिसमें लगभग 77 लोगों की मौत हो गई थी।

जुलाई 2011 : फतेहपुर में एक मेल ट्रेन के पटरी से उतरने के कारण 70 लोगों की मौत हो गई थी और 300 लोग घायल हो गए थे।

नवंबर 2016 : उत्तर प्रदेश में एक एक्सप्रेस ट्रेन के पटरी से उतरने के कारण 146 लोग मारे गए और 200 से अधिक घायल हो गए थे।

जनवरी 2017 : आंध्र प्रदेश में एक पैसेंजर ट्रेन के कई डिब्बे पटरी से उतर गए, जिसमें 41 लोग मारे गए थे।

अक्टूबर 2018 : अमृतसर में रेल ट्रैक पर जमा भीड़ को एक ट्रेन ने कुचल दिया था, जिसमें 59 लोगों की मौत हो गई थी।

बीएसएल में लेजर-आधारित पहली एंटी कोलिशन डिटेक्शन प्रणाली लागू

कच्चे माल और उपकरणों का टकराव रोकने में होगी सहूलियत

संवाददाता

बोकारो : बोकारो स्टील प्लांट में आरएमएचपी स्टेकर के लिए एंटी कोलिशन डिटेक्शन सिस्टम का उद्घाटन अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीके तिवारी ने किया। मटेरियल बेड बनाने के लिए आरएमएचपी में स्टेकर मशीनों का उपयोग किया जाता है, लेकिन असमान मटेरियल डंपिंग के कारण बेड की ऊपरी परत असमान हो जाती है, जिसके कारण कच्चे माल के ढेर से टकराने से बचने के लिए स्टेकर के बूम को सावधानी से चलाने की आवश्यकता होती है। कभी-कभी अनजाने में बूम एडजस्टमेंट की विफलता के कारण स्टैकर संरचना कच्चे माल के ढेर से टकरा जाती है, जिससे स्टैकर बूम टूट जाता है और क्षतिग्रस्त हो जाता है।

आधिकारिक सूत्रों के अनुसार गतिमान संयंत्र की वस्तुओं, जैसे स्टैकर और सामग्री के ढ़ेर के बीच कोलिशन (टक्कर) का अनुमान लगाना और रोकना कठिन कार्य है। सहवर्ती कोलिशन से उपकरणों को नुकसान के साथ ही उत्पादन भी प्रभावित हो सकता है।

कोलिशन का पता लगाने के पारंपरिक तरीके या तो लिनियर ट्रांसड्यूसर या इन्फ्रारेड/रडार दूरी पहचान प्रणाली पर आधारित होते हैं। लिनियर ट्रांसड्यूसर के 'स्लिप' होने की संभावना बनी रहती है और इन प्रणालियों का मेंटेनेंस भी अधिक है। उचित संचालन के लिए इन्फ्रारेड/रडार सिस्टम को हर समय बेदाग साफ रखा जाना जरूरी होता है, जो सिंटर, डोलोमाइट, लौह अयस्क, आदि जैसे महीन चूर्ण सामग्री के साथ यार्डों में सुनिश्चित करना बहुत कठिन है।

ईएल एंड टीसी और आरएमएचपी विभागों की टीम ने बूम और कच्चे माल के ढेर के बीच कोलिशन को रोकने की चुनौती ली। टीम ने लेजर तकनीक पर आधारित टकरावरोधी प्रणाली को इन-हाउस डिजाइन किया और इसे स्टेकर 4 पर स्थापित किया। शरद गुप्ता, सीजीएम (मेंटेनेंस), धनंजय कुमार, सीजीएम (आरएमएचपी), बिपिन कृष्ण सरतापे (सीजीएम-सी, ए एंड कम्युनिकेशन), वीके सिंह, सीजीएम (मैकेनिकल) और एस गंगोपाध्याय, जीएम (ईएल एंड टीसी), जॉयदीप दासगुप्ता, महाप्रबंधक (आरएमएचपी) और ईएल एंड टीसी और आरएमएचपी विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अंत में सिस्टम का सफल लाइव प्रदर्शन दिखाया गया। श्री तिवारी ने इस सिस्टम के इन-हाउस डिजाइन के लिए टीम को बधाई दी। यह लेजर तकनीक पर आधारित पहला एंटी कोलिशन डिटेक्शन सिस्टम है जिसे सेल-बोकारो स्टील प्लांट में लागू किया गया है।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल में बिखरी प्रसन्नता
मन की उत्फुल्लता, सुभीता
राम, लखन, सीता जंगल में
कान्हा और गीता जंगल में
मानव-धर्म यहीं से निकसे
ले ली आगे अपनी-अपनी धार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल घर हैं ज्ञान-सुधा का
यहीं बने सब पुरूष-शलाका
मर्म मोक्ष के गाते जंगल
वेद उपनिषद्, दर्शन कहिए
या पुराण का कोई हो विस्तार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल में इतिहास मिला है
जीर्ण खण्डहर, कुआं, किला है
परकोटों, छत, दीवारों पर
पूर्वज का सब हुनर खिला है
यह इतिहास हमें सिखलाता
कुछ भी नित्य नहीं है इस संसार...जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

पेज- एक का शेष

बेपटरी सिस्टम...

सिग्नल संबंधी दिक्कत होने की आशंका है। शुरुआती रिपोर्ट में मानवीय गलती की बात सामने आ रही है, जो रेलवे के सिग्नलिंग कंट्रोल रूम से है। इसके अनुसार हादसे से ऐन वक्त पहले रेल गलत पटरी पर चली गई थी। चेन्नई जाने वाली कोरोमंडल एक्सप्रेस मुख्य लाइन की बजाय बाहानगर बाजार स्टेशन के पास वाली लाइन पर चली गई, जिस ट्रैक पर एक मालगाड़ी खड़ी थी। उस समय कोरोमंडल एक्सप्रेस ट्रेन की रफ्तार लगभग 127 किलोमीटर प्रतिघंटे थी। ट्रेन मालगाड़ी से टकरा गई और कोरोमंडल के डिब्बे बेपटरी हो गए। कुछ ही मिनटों में विपरीत दिशा से आ रही हावड़ा की ओर जाने वाली यशवंत नगर एक्सप्रेस पटरी से उतरी हुई कोरोमंडल एक्सप्रेस से टकरा गई। उस ट्रेन की रफ्तार भी काफी अधिक थी और एक साथ तीन-तीन ट्रेनों के टकराने से भीषण रेल दुर्घटना हो गई।

राहत व बचाव में मसीहा बन उभरे लोग

इस घटना में केवल प्रशासन की ओर से भेजी गई टीम के लोगों ने मदद नहीं की, बल्कि घटनास्थल के आस-पास रह रहे लोग भी मसीहा बनकर आए। लोगों ने जरूरतमंदों को अपनी जान जोखिम में डालकर मौत के मुंह से बाहर निकाला। कई लोग अस्पतालों में रक्तदान करने भी पहुंचे, जो मानवता के संबंध को बताता है। वैसे, बचाव कार्य में वायुसेना, एनडीआरएफ की छह टीमें, ओडिशा डीआरएएफ की 4 यूनिट और 60 एम्बुलेंस राहत कार्य में जुटी रहीं। भुवनेश्वर और कोलकाता से भी टीमें भेजी गईं।

मिथिला वर्णन
हिन्दी साप्ताहिक

देश-विदेश वर्णन

Postal Reg. No.- DNB- 072/2021-23
बोकारो रविवार 04.06.2023
News & E-paper : www.varnanlive.com

सक्षम हाथों में 'सेल' की कमान

अमरेंदु प्रकाश ने संभाला सेल चेयरमैन का दायित्व

विजय कुमार झा

नई दिल्ली/बोकारो : इस्पात जगत की महारत्न कंपनी सेल (भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड) की कमान बोकारो स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी रहे अमरेंदु प्रकाश ने संभाल ली है। सेल अध्यक्ष का कार्यभार उन्होंने ग्रहण कर लिया। उनक बीआईटी सिंदरी से मेटलर्जिकल इंजीनियर, श्री प्रकाश ने 1991 में एक प्रबंधन प्रशिक्षु (तकनीकी) के रूप में सेल ज्वाइन किया। सेल के विभिन्न संयंत्रों और इकाइयों में विभिन्न पदों पर अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए, श्री अमरेंदु प्रकाश 2020 में सेल बोर्ड में बोकारो संयंत्र के निदेशक प्रभारी के रूप में चुने गए थे।

श्री प्रकाश एक कुशल टेक्नोक्रेट हैं। सेल में तीन दशकों से अधिक के अपने कार्यकाल में, श्री प्रकाश को शॉप लेवल पर प्लांट ऑपरेशंस, सेल मुख्यालय में कॉपोरेट गतिविधियों और माइनिंग ऑपरेशंस के साथ एक बड़े स्टील प्लांट के संचालन करने का अनुभव रहा है। वह उस टीम के प्रमुख सदस्य थे, जो 2015-17 में सेल के व्यवसाय परिवर्तन और वित्तीय बदलाव का नेतृत्व कर रही थी। ऐसी शख्सियत को सेल चेयरमैन का दायित्व मिलना सेल के उत्तरोत्तर उत्थान की उम्मीद को और बलवती कर रहा है।

बोकारो इस्पात संयंत्र के निदेशक प्रभारी का कार्यभार संभालने के बाद श्री प्रकाश ने साल दर साल सभी प्रमुख मापदंडों में अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन तक पहुंचने के लिए प्लांट टीम का नेतृत्व किया है। इस दौरान मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तरह से बेहतर प्रदर्शन दर्ज किया गया। अपने महत्वपूर्ण संगठनात्मक और रणनीतिक योजना कौशल के साथ, श्री प्रकाश व्यावसायिक प्रक्रियाओं और परियोजना कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण बदलाव लाने में सहायक रहे। तकनीकी रूप से कुशल लीडर के रूप में, वह कंपनी के डिजिटलीकरण के प्रयासों का नेतृत्व कर रहे हैं। कारोबार मैक्सिमाइज़िंग टीम के एक प्रमुख सदस्य के रूप में, वह न केवल संगठन बल्कि ग्राहकों के लिए भी वैल्यू बढ़ाने हेतु समग्र उत्पादन और बिक्री योजना की रणनीति बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

30 अप्रैल को रिटायर हुई थीं सोमा मंडल

उल्लेखनीय है कि श्री प्रकाश के पहले सेल चेयरमैन के पद पर सोमा मंडल विराजमान थीं, जो पिछले 30 अप्रैल को सेवानिवृत्त हो चुकी हैं। इसके बाद 1987 बैच के आईएएस अधिकारी नरेन्द्र नाथ सिन्हा सेल चेयरमैन के प्रभार में थे। प्राप्त जानकारी के अनुसार पब्लिक इंटरप्राइजेज सलेक्शन बोर्ड (पीईएसबी) की सिफारिश सिर्फ 6 महीनों के लिए वैध होती है और अंतिम अधिसूचना इस समय सीमा के भीतर जारी हो जानी चाहिए। इसी क्रम में लगभग डेढ़ महीने बाद बुधवार को एसीसी ने सेल चेयरमैन के पद पर अमरेन्दु प्रकाश की नियुक्ति को अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी।

बोकारो से की थी सेल में अपनी सेवा की शुरुआत

अमरेन्दु प्रकाश ने 28 सितंबर, 2020 से बोकारो स्टील प्लांट (बीएसएल) के निदेशक प्रभारी का पद ग्रहण किया था। वह बीआईटी सिंदरी, (रांची विश्वविद्यालय) से धातु विज्ञान में बी.टेक तथा एक निपुण टेक्नोक्रेट हैं। उनके पास सेल में 28 साल का अनुभव है, जिसमें बीएसएल में संयंत्र संचालन में 24 साल और सेल में अध्यक्ष के कार्यालय में 4 साल का अनुभव शामिल है। श्री प्रकाश ने वर्ष 1991 में बोकारो स्टील प्लांट की रोलिंग मिल्स में पोस्टिंग के साथ सेल में अपना करियर शुरू किया। बीएसएल में 20 साल के लंबे कार्यकाल के दौरान उन्होंने स्टील रोलिंग और फिनिशिंग की कला में महारत हासिल की। श्री प्रकाश ने 1997 और 2007 में हॉट स्ट्रिप मिल (एचएसएम) के उन्नयन को समय पर पूरा करने, एचएसएम में ईआरपी और सिक्स सिग्मा प्रमाणन के कार्यान्वयन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और एक प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में सेवा देने के लिए प्रौद्योगिकी हब की स्थापना के पीछे प्रेरक शक्ति थी। हॉट रोलिंग, पेटेंटिंग और कॉपीराइट गतिविधियों के समन्वय में अनुसंधान के लिए वह एक थिंक-टैंक माने जाते हैं। उनके सक्षम नेतृत्व में, रीहीटिंग फर्नेस के तकनीकी डिजाइन पर पेटेंट सफलतापूर्वक दायर किया गया। उन्होंने अपनी सेवा के दौरान जर्मनी, फ्रांस, इटली, दक्षिण कोरिया जैसे देशों की यात्रा कर स्टील मैन्युफैक्चरिंग टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में अपने विशाल ज्ञान और अनुभव के लिए अत्यधिक मूल्यवर्धन किया है।

एक दूरदर्शी व ऊर्जावान नेतृत्वकर्ता

एक दूरदर्शी और ऊर्जावान लीडर, श्री प्रकाश कर्मचारियों के साथ सभी स्तरों पर जुड़ाव रखते हैं और उन्हें विभिन्न पहलों के माध्यम से उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। बोकारो संयंत्र के निदेशक प्रभारी के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने विशेष ओलंपिक के आयोजन सहित खेलों को प्रोत्साहित करने के लिए कई पहलें की। उन्होंने सार्वजनिक भागीदारी से जुड़ी कई सामाजिक पहलों के जरिये बोकारो शहर और परिधीय क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव लाने का काम किया है। वह व्यापक रूप से विदेश यात्रा करने वाले टेक्नोक्रेट हैं और उन्होंने इस्पात और खनन उद्योग पर विस्तृत ज्ञान एकत्र किया है।

पीईएसबी के साक्षात्कार में हुए थे चयनित

मालूम हो कि सार्वजनिक उद्यम चयन बोर्ड (पीईएसबी) द्वारा बोकारो इस्पात संयंत्र के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश को सेल के अगले अध्यक्ष के रूप में पिछले 12 अप्रैल को चुन लिया गया था। सेल अध्यक्ष के पद पर अमरेन्दु प्रकाश का चयन पीईएसबी द्वारा आयोजित एक साक्षात्कार के आधार पर किया गया था। सेल सूत्रों के अनुसार पीईएसबी की चयन प्रक्रिया में चुने गए अमरेन्दु प्रकाश को चेयरमैन के पद पर बैठने से पहले विभिन्न विभागों से मंजूरी प्राप्त की गई। संबंधित विभागों से स्वीकृति प्राप्त होने के पश्चात पीईएसबी की सिफारिश को अंतिम अनुमोदन और अधिसूचना के लिए कैबिनेट की नियुक्ति समिति (एसीसी) के पास भेजा गया था, जिस पर बुधवार को केन्द्रीय कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने अपनी मुहर लगा दी।

वित्तीय बदलाव में रही है महत्वपूर्ण भूमिका

सेल अध्यक्ष के कार्यालय में अपने छोटे कार्यकाल के दौरान उन्होंने शीर्ष स्तर पर प्रमुख रणनीतियों के निर्माण और विकास तथा उनके प्रभावी कार्यान्वयन की व्यवस्था की। वह सेल के व्यवसाय परिवर्तन और वित्तीय बदलाव को चलाने में शामिल थे, जिसके परिणामस्वरूप कंपनी को वित्त वर्ष 16 से शुरू होने वाली 3 साल की घाटे की लकीर से वित्त वर्ष 19 में लाभ में वापस लाने में मदद मिली। उन्होंने प्रबंधन व्यवसाय सिमुलेशन प्रतियोगिता में टीम का नेतृत्व किया और भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली वैश्विक प्रबंधन प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए एशियाई चैम्पियनशिप जीतने के अलावा राष्ट्रीय चैम्पियनशिप जीती। वर्ष 1999 में उन्हें अपने नेतृत्व गुणों के लिए सर्वश्रेष्ठ युवा प्रबंधक के लिए सेल द्वारा प्रतिष्ठित जवाहर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सेल चेयरमैन के पद पर श्री प्रकाश के चयन को केंद्रीय कैबिनेट की स्वीकृति मिलने के बाद बोकारो स्टील प्लांट के कर्मचारियों और अधिकारियों में हर्ष का माहौल है।

CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY
शिवम् हॉस्पीटल में
सेल के रिटायर्ड कर्मचारियों के लिए
मोतियाबिन्द का ऑपरेशन
एवं लेंस लगाया जाता है।
E-2, LAXMI MARKET, SECTOR-4, B.S.CITY-827004
PH: 06542-232623/233475, MOB: 7488090631

The Bokaro MALL
BOKARO MALL
Pride of Bokaro
Along with-

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा डीबी कॉर्प लिमिटेड, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, गोविन्दपुर रोड, जीके आश्रम, धनबाद से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा*** प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)